कहां गए वो 3600 मरीज जिन्हें मिल सकता है 20-20 लाख मुआवजा

Rahul.Anand@timesgroup.com

■ **नई दिल्ली:** जॉनसन एंड जॉनसन कंपनी के फॉल्टी हिप रिप्लेसमेंट के शिकार 3600 मरीजों का कुछ अता-पता ही नहीं है। न डॉक्टर को पता है और न ही इंप्लांट सप्लाई करने वाली कंपनी को इस बारे में कोई जानकारी है। कंपनी के इंप्लांट में आई खराबी के बाद केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक कमिटी बनाई थी। कमिटी ने अपनी सिफारिश में जहां एक तरफ कंपनी को फॉल्टी करार दिया है, वहीं सभी प्रभावित मरीजों को 20 लाख रुपये मुआवजा देने की भी सिफारिश की है। यही नहीं, कमिटी ने अगस्त 2025 तक सभी मरीजों के खराब इंप्लांट बदलने की भी बात कही है। अब कंपनी ने ऐसे मरीजों की खोज करने के लिए अपनी वेबसाइट पर हेल्पलाइन नंबर जारी कर संपर्क करने को कहा है। बता दें कि जॉनसन एंड जॉनसन की सहायक कंपनी डीपू ऑर्थोपेडिक्स आईएनसी ने एक इंप्लांट डिवाइस बनाई थी। फॉल्ट आने के बाद अमेरिका में कंपनी ने 2010 में सभी डिवाइस वापस ले ली थी। लेकिन, भारत में उसने इंप्लांट्स इसके बाद भी जारी रखा।

जॉनसन एंड जॉनसन कंपनी से फॉल्टी हिप रिप्लेसमेंट कराने वालों का पता नहीं

अमेरिका में बैन के बाद भी कंपनी ने भारत में लॉन्च की डिवाइस

■ मौलाना आजाद मेडिकल कॉलेज के पूर्व डीन प्रोफेसर अरुण अग्रवाल की अध्यक्षता वाली कमिटी ने यह रिपोर्ट दी है, जिसमें कंपनी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की सिफारिश की गई है। इस बारे में मैक्स के ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. रमणीक महाजन ने कहा कि कंपनी ने इंप्लांट डिवाइस बनाई थी, वह अमेरिका में बैन हो गया था, बावजूद कंपनी ने इंडिया में इसे लॉन्च कर दिया और यहां लगभग चार हजार मरीजों में यह इंप्लांट लगा दिया गया, जिसका कोई रेकॉर्ड नहीं है।

क्या कहते हैं एक्सपर्ट्स

“ हमारे पास कोई रजिस्ट्री सिस्टम नहीं है। अगर यह होता तो हम आसानी से यह पता कर सकते थे कि मरीज कहां पर है और किस स्थिति में है। इसके लिए सरकार को रजिस्ट्री बनानी चाहिए।

-डॉ. यश गुलाटी, अपोलो के ऑर्थोपेडिक सर्जन

“ यह इंप्लांट शुरू से ही दिक्कत कर रहा था। सक्सेस रेट भी कम होता जाता है। हमें हर हाल में नए रिसर्च और नए इंप्लांट लगाने से पहले 10 से 12 साल का क्लीनिकल रिजल्ट देखना चाहिए। *- डॉ. आशीष चौधरी, आकाश हॉस्पिटल के ऑर्थोपेडिक सर्जन*

“ स्टडी से पता चला है कि इस इंप्लांट का मैटल आपस में टकराने से टूटता है और यह जॉइंट पर जाकर जमा होने लगता है, जिससे मांसपेशियों में दर्द होने लगता है। *- डॉ. आर. के. पांडे, वेंकटेश्वर हॉस्पिटल के आर्थोपेडिक सर्जन*